जुगल जोड़ी: ठग गुरु के साथ जुड़ा नफरत फैलाने वाला पत्रकार अरनब गोस्वामी

जो मजा भाजपा और संघ की दलाली में है, वो पतंजलि का माल बेचने में कहां है

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली: खुद को ईमानदार और राष्ट्रवादी पत्रकार बताने वाले टीवी पत्रकार और रिपब्लिक टीवी के डायरेक्टर अरनब गोस्वामी का एक फोटो ठग गुरु और बिजनेसमैन लाला रामदेव के साथ हाल ही में नजर आया। इस फोटो के कई मायने हैं और एक बार फिर से यह सवाल पूछा जाने लगा है कि आखिर रिपब्लिक टीवी की फंडिंग कौन कर रहा है और नेताओं से उसकी क्या सांठगांठ है।

जिस कंपनी ने रिपब्लिक टीवी में फंडिंग की है, केंद्र सरकार के कंपनी लॉ बोर्ड के मुताबिक उस कंपनी का नाम एआरजी आउटलियर है। इसमें और कई निवेशक हैं लेकिन सबसे ज्यादा पैसा एआरजी आउटलियर का लगा हुआ है। एआरजी आउटलियर दरअसल भाजपा के राज्यसभा सांसद राजीव चंद्रशेखर की तमाम कंपनियों में से एक है। राजीव चंद्रशेखर कर्नाटक के रहने वाले हैं लेकिन उन्हें भाजपा ने केरल में अपने नेतृत्व में चलने वाले नैशनल डेमोक्रेटिक अलायंस का वाइस चेयरमैन बना रखा है। राजीव चंद्रशेखर आरएसएस का ही एक बिजनेसमैन चेहरा हैं। आरएसएस से जुड़े लोगों ने राजीव चंद्रशेखर की तमाम कंपनियों में पैसा लगा रखा है।

तमाम तरह की आर्थिक गतिविधियों के अलावा राजीव चंद्रशेखर की कंपनियों के तार रक्षा सौदो से जुड़ते हैं। इस चैनल की मौजूदगी मीडिया की परंपराओ और लोकतंत्र की सेहत दोनो के मद्देनजर बहस का विषय है।

जुगलबंदी : अरनब गोस्वामी और रामदेव

राज्यसभा का सांसद होने के अलावा वह कई संसदीय समितियों में सदस्य और महत्वपूर्ण पदों पर हैं। संसदीय समितियां अपने फैसलों से केंद्र सरकार के तमाम मंत्रालयों की नीतियों को प्रभावित करती हैं।

संसद की डिफेंस स्टैंडिंग कमेटी के वह सदस्य हैं। यही वह कमेटी है जो रक्षा सौदों के बारे में तमाम केंद्रीय नीतियों को बिजनेसमैनों, बिचौलियों के हिसाब से तोड़ती-मरोड़ती है। राजीव चंद्रशेखर वित्त पर परामर्श देने वाली संसदीय समिति के सदस्य हैं। पब्लिक अकाउंटस कमेटी के बाद यही वह कमेटी है जो आरबीआई, तमाम बैंकों पर नजर रखती है। वह एनसीसी की नैशनल एडवाइजरी काउंसिल के सदस्य हैं। वह रीयल एस्टेट के लिए बनी केंद्र सरकार की सिलेक्ट कमेटी के सदस्य हैं। इसके अलावा बेंगलुरु की ढेरों कमेटियों के भी मेंबर हैं।

राजीव चंद्रशेखर ने ज्यूपिटर कैपिटल प्राइवेट लिमिटेड के नाम से एक कंपनी बना रखी है। यह एक फाइनैंशियल सर्विसेज और इन्वेस्टमेंट कंपनी है। ज्यूपिटर कैपिटल ने दक्षिण भारत के प्रमुख न्यूज चैनल एशियानेट न्यूज में सबसे ज्यादा पैसा लगा रखा है। इसी कंपनी ने रिपब्लिक टीवी में भी सबसे ज्यादा तीस करोड़ रुपये लगा रखे हैं।

चंद्रशेखर देखते देखते कितने बड़े बिजनेसमैन बन गए, इसकी चर्चा मेनस्ट्रीम का पूंजीवादी मीडिया कभी नहीं करता और न ही वह अरनब गोस्वामी या राजीव चंद्रशेखर से सवाल पूछने की हिम्मत जुटा पाता है। अरनब गोस्वामी को राजीव चंद्रशेखर आरएसएस का मोहरा बना चुके हैं और उस दलदल में फंसे गोस्वामी अब निकल नहीं पा रहे हैं।

हिंदी रिपब्लिक क्यों

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हाल ही में रिपब्लिक टीवी के प्रोग्राम में मुंबई गए थे। वहां उन्होंने अरनब गोस्वामी की तारीफों के पुल बांधे। जिसमें उन्होंने कहा कि जब भी उन्हें टीवी पर समाचार देखने का मौका मिलता है, वह अरनब गोस्वामी को ही सुनते और देखते हैं। ...प्रधानमंत्री की ग्रैजुएट डिग्री का आजतक पता नहीं चला है और उनका कोई साथ पढ़ा हुआ सहपाठी ही मिला लेकिन मोदी जी जिस अंदाज में अंग्रेजी बोलते और समझते हैं कि जरूर अरनब ही उनकी प्रेरणा हैं। इस प्रोग्राम में ठग गुरु लाला रामदेव भी आए थे। रामदेव पिछले काफी समय से गोस्वामी पर इस बात का दबाव बना रहे थे कि रिपब्लिक टीवी हिंदी में भी होना चाहिए, क्योंकि कुछ चैनल जब-तब उनका नुकसान भी करते रहते हैं इसलिए एक ऐसा चैनल हो, जो हमारी हर बात को मानता हो। रामदेव ने अरनब गोस्वामी से वादा किया है कि हिंदी वाले चैनल को पैसे की कमी नहीं होने दी जाएगी। यहां तक कि दूसरे चैनलों के विज्ञापनों में पंतजलि के विज्ञापनों में कटौती करके उसे रिपब्लिक हिंदी चैनल की तरफ मोड़ दिया जाएगा।

इस घटनाक्रम से अरनब गोस्वामी काफी खुश नजर आ रहे हैं, क्योंकि ठग गुरु ने अगर अपने विज्ञापनों का रुख रिपब्लिक की तरफ कर दिया तो बाकी चैनलों को आर्थिक नुकसान होगा और उनमें से कई विज्ञापनों के अभाव में दम तोड़ देंगे। गोस्वामी की एक हसरत यह भी है कि जिन चैनलों में अभी भी भाजपा विरोधी माहौल है और वे अपने विशाल दर्शक वर्ग की वजह से टिके हुए हैं, अगर बंद हो गए तो उधर के ग्राहक इसी चैनल की तरफ आ जाएंगे। अरनब गोस्वामी बहुत ही महत्वाकांक्षी है।

नफरतों के सहारे खड़े किए चैनल रिपब्लिक से पहले अरनब ने देश के सबसे बड़े पूंजीवादी मीडिया ग्रुप के चैनल टाइम्स नाउ में नौकरी की थी। वहां उन्होंने अपनी तमन्नाओं को परवाना चढ़ाना चाही लेकिन टाइम्स ग्रुप इन चीजों को पहले भांप लेता है और अपने संपादकों को हमेशा औकात में रखता है।

इसीलिए जैसे ही गोस्वामी ने खुद को मीडिया का खुदा मान लिया और खुलेआम बीजेपी की दलाली करने लगे, टाइम्स ग्रुप ने उनको फौरन निकाल बाहर किया। तब गोस्वामी ने टाइम्स ग्रुप को चुनौती देने के लिए रिपब्लिक शुरू किया लेकिन टाइम्स ग्रुप को अभी तक वह अपने किसी भी एक्शन से चुनौती नहीं दे पाए।

बेगुनाह लड़कों को पकड़कर किसको उल्लू बना रही है एनआईए...

बीबीसी की विडियो रिपोर्ट ने खोल दी पूरी पोल

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

अमरोहा: राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने बुधवार (26 दिसंबर) को दावा किया कि उत्तर प्रदेश और नई दिल्ली में छापेमारी कर आईएसआईएस से प्रेरित एक संदिग्ध आतंकी मॉड्यूल का पर्दाफाश किया। एनआईए ने इस सिलसिले में करीब 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। उन पर राजनीतिक हस्तियों और दिल्ली में सरकारी प्रतिष्ठानों सहित उत्तर भारत के कई अन्य हिस्सों में हमले की योजना बनाने का आरोप है। लेकिन एनआईए के इस आरोप को 24 घंटे भी नहीं बीते थे कि उस गांव में पहुंचे पत्रकारों ने एनआईए की पोल फौरन खोल दी। बीबीसी ने तो बाकायदा गांव वालों के इंटरव्यू करके एक विडियो जारी कर दिया, जिसमें इस झूठ का पर्दाफाश हो गया।

एनआईए ने 'हरकत उल हर्ब ए इस्लाम' नाम के नए मॉड्यूल की अपनी जांच के सिलसिले में उत्तर प्रदेश और नई दिल्ली में 17 जगहों पर छापेमारी की। दिल्ली और उत्तर प्रदेश में 17 जगहों पर पड़े इन छापों के दौरान मिले तथाकथित हथियारों और विस्फोटकों को भी एनआईए दे दिखाया। हथियारों में घर में बनी रिवाल्वर भी शामिल है जिसे देसी कट्टा कहते है। जांच एजेंसी ने दावा किया है कि छापे के दौरान उन्होंने एक 'रॉकेट लॉन्चर' भी जब्त किया है।

गिरफ्तार किए गए लोगों में मुफ़्ती मोहम्मद सुहैल उर्फ हज़रत, अनस यूनुस, राशिद ज़फ़र रक़ा उर्फ ज़फ़र, सईद उर्फ सईद, सईद के भाई रईस अहमद, ज़ुबैर मलिक, ज़ुबैर के भाई ज़ैद, साक़िब इत्तेकर, मोहम्मद इरशाद और मोहम्मद आज़म शामिल है।

सईद और रईस की मां ने सनसनीखेज खुलासा किया है कि एनआईए के अधिकारियों ने हमारे ट्रैक्टर ट्रॉली के प्रेशर नोजल को भी जब्त किया है। जिसे उन्होंने एक 'रॉकेट लॉन्चर' बताया है। मां ने पत्रकार प्रशांत कुमार से कहा, वो हमारे ट्रैक्टर ट्रॉली के प्रेशर नोजल को 'रॉकेट लॉन्चर' बता रहें है, जिसे वो अपने साथ ले गए है। उन्होंने हमारे बेटे को भी गिरफ्तार कर लिया।

वहीं, गिरफ्तार किए गए लोगों के एक रिश्तेदार नफीस अहमद ने ट्रैक्टर पर ट्रॉली में इस्तेमाल किए गए एक नोजल को जमीन पर

रख बताया कि इसका ट्रैक्टर में इस्तेमाल होता है।

बता दें कि एनआईए ने दावा किया है कि पकड़े गए लोग देसी कट्टा और पटाखों के साथ भारत पर हमला करने की योजना बना रहें थे। समाचार एजेंसी पीटीआई के अनुसार, एनआईए के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक आलोक मित्तल ने संवाददाताओं से कहा कि पकड़े गए लोग विदेशी आकाओं के संपर्क में थे। उन्होंने कहा कि उसके विदेशी आकाओं की पहचान अब तक नहीं हो पाई है। उन्होंने बताया कि पकड़े गए 16 लोगों में से 10 को एजेंसी ने गिरफ्तार किया जबकि छह से पूछताछ की जा रही है, कुछ अन्य गिरफ्तारियां मुमकिन हैं।

उन्होंने बताया कि लोगों को यूपी के लखनऊ, अमरोहा, हापुड़ और पूर्वोत्तर दिल्ली के सीलमपुर और जाफराबाद से गिरफ्तार किया गया। छापों में बड़ी संख्या में विस्फोटक, एक देसी रॉकेट लॉंचर, 100 मोबाइल फोन और 135 सिम कार्ड भी बरामद किए गए। 7.5 लाख रुपए नगद भी बरामद किए गए।

एनआईए के कामकाज से परिचित वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों ने कहा कि बुधवार की छापेमारी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के इशारे पर हुई थी। एजेंसी के इन खुलासों के बाद सोशल मीडिया पर लोग एनआईए का जमकर मजा उडा रहें है। क्योंकि उन्होंने दिवाली के मौके पर इस्तेमाल किए जाने वाले पटाखों को बम के रूप में दिखाया था।

अभी कल तक भाजपा के जम्मू कश्मीर में सरकार चलाने वाली पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती ने इस घटनाक्रम पर कड़ी टिप्पणी की। महबूबा मुफ्ती ने शुक्रवार (28 दिसंबर) को ट्वीट कर लिखा, राष्ट्रीय सुरक्षा का विषय सर्वोपरि है, लेकिन संदिग्धों को सुतली बम के आधार पर आतंकी और आईएस से जुड़ा बताने का दावा अतार्किक है। इस आरोप ने पहले ही इन लोगों और इनके परिवारों के जीवन को बर्बाद कर दिया है। ऐसे में एनआईए को उन मौकों से सबक लेना चाहिए, जिनमें आरोपी दशकों के बाद आरोपों से बरी हो गए थे। वहीं एक अन्य ट्वीट में महबूबा ने एजेंसियों द्वारा ऑपरेशन करने की टाइमिंग पर सवाल उठाते हुए लिखा, अर्बन नक्सल केस के बाद फिर चुनावी समय में एनआईए के द्वारा की गई गिरफ्तारी अब शक के घेरे में है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एजेंसी को किसी एक समुदाय के प्रति संदेह से नहीं, बल्कि पूरे देश के प्रति समावेशी रूप से सोचना चाहिए।

पार्क में नमाज के साथ आरएसएस की शाखा पर बैन क्यों नहीं

गुड़गांव के बाद अब नोएडा में माहौल बिगाड़ने की कोशिश

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नोएडा: गुड़गांव के बाद अब नोएडा औद्योगिक शहर में पार्क में नमाज पढ़े जाने पर रोक लगवाकर आरएसएस और भाजपा के गुर्गे खुलेआम अभी से 2019 लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट गए हैं। नोएडा सेक्टर 62 के पार्क में शुक्रवार को प्रशासन ने मुस्लिम कर्मचारियों को नमाज नहीं पढ़ने दी। पूरे पार्क में पानी भरवा दिया गया ताकि कोई यहां आकर नमाज न पढ़ सके। इससे पहले हरियाणा के साइबर हब गुड़गांव में खट्टर सरकार यही हरकत कानून व्यवस्था ठीक करने के नाम पर कर चुकी है।

नोएडा उत्तर प्रदेश पुलिस ने रोक लगाई। इसके लिए पुलिस ने इलाके में स्थित सभी कंपनियों को नोटिस भेजा। नोटिस के मुताबिक, अगर नोएडा सेक्टर-58 के स्थित कंपनी के कर्मचारी नियमों का उल्लंघन करते पाए तो इसके लिए संस्थान को ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा। वहीं, अब एक कांग्रेस नेता ने यूपी के डीजीपी ओपी सिंह ने पत्र लिखकर मांग की है कि सार्वजनिक जगहों पर बिना अनुमति के लगने वाली संघ की शाखाओं पर भी पूरे राज्य में पाबंदी लगाई जाए। उत्तर प्रदेश कांग्रेस के विचार विभाग के नेता संपूर्णानंद ने अपने पत्र में लिखा है कि वे जिले-जिले जाकर बीजेपी सरकार को एक्सपोज करेंगे। कांग्रेस नेता ने अपने पत्र में लिखा, यूपी पुलिस ने कंपनियों को नोटिस जारी किया है कि वे अपने कर्मचारियों को पब्लिक पार्क के बाहर या अंदर नमाज पढ़ने से मना करें। इसके लिए कांग्रेस नेता ने 2009 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हवाला दिया देते हुए कहा है कि सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के अलावा पब्लिक पार्कों में भी संघ की शाखाएं बिना अनुमति के आयोजित की जाती हैं, जहां पर समाज को तोड़ने का संदेश फैलाया जाता है।

अपनी चिट्ठी में कांग्रेस नेता ने डीजीपी से आग्रह किया है कि इस संदर्भ में सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों को पुन: नोटिस भेजा जाए। उन्होंने कहा, इस तरह की गतिविधियों पर तत्काल विराम लगाया जाए, जिससे प्रदेश आने वाले समय में किसी सामाजिक टकराव की दुर्घटनाओं से बच सके।

इससे पहले ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के अध्यक्ष और हैदराबाद से सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने यूपी पुलिस के इस फैसले पर पलटवार करते हुए कहा कि कांवड़ियों के लिए फूल बरसाने वाली पुलिस को हफ्ते में एक बार पढ़ी जाने वाली नमाज से दिक्कत हो रही है। ये बिल्कुल वैसा हुआ कि आप मुसलमानों से कह रहे हो कि आप कुछ भी कर लो, लेकिन गलती तो आपकी ही होगी। इसके अलावा, कानून के अनुसार, कोई व्यक्ति कर्मचारी अगर व्यक्तिगत तौर पर कुछ करता है तो इसके लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों को कैसे उत्तरदायी ठहरा जा सकता है?

नोएडा थाना सेक्टर- 58 के प्रभारी निरिक्षक पंकज राय ने मंगलवार को कहा था कि, यह पार्क नोएडा अथॉरिटी के अंतर्गत आता है और पहले यहां 5 से 10 लोग नमाज पढ़ने आते थे जिससे लोगों को कोई दिक्कत नहीं थी। लेकिन कुछ दिनों बाद पार्क में आसपास की कंपनियों के करीब 200 कर्मचारी भी यहां पर नमाज पढ़ने पढ़ने के लिए आने लगे। जिसके बाद यहां घूमने वाले लोगों ने आपत्ति जताते हुए पुलिस में शिकायत कर दी, जिसके बाद हमने यह नोटिस जारी किया।

पंकज राय ने आगे कहा कि पार्क के आसपास मौजूद कंपनियों को इस बारे में सूचित कर दिया गया है। उनकी कंपनी में मौजूद मुस्लिम लोगों के लिए नमाज पढ़ने के लिए जगह दी जाए और उन्हें बता दिया जाए कि खुले पार्क में नमाज़ अदा ना करें। यदि किसी कंपनी का कर्मचारी पार्क में नमाज पढ़ते हुए दिखा तो इसकी जिम्मेदारी कंपनी की होगी।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06